ओमशान्ति। स्टुडेन्ट जब पढ़ते हैं तो खुशी से पढ़ते हैं। रूहानी बच्चे भी जानते हैं बेहद का बाप जो टिचर भी है हमको बहुत खुशी से पढ़ाते हैं। उस पढ़ाई में तो बाप अलग होता है, टिचर अलग होता है। अगर कोई बाप ही टिचर होता है तो बहुत खुशी से पढ़ाते हैं। क्योंकि फिर भी ब्लड कनेक्शन होता ना। अपना समझ कर बहुत खुशी से पढ़ाते हैं। यहाँ यह है रूहानी बाप। जो रूहानी टिचर भी है। तो सभी बच्चे हो गये। बाप ही अपने बच्चों को पढ़ाते हैं। कितना खुशी से पढ़ाते होंगे। बच्चों को भी कितना खुशी से पढ़ना चाहिए। क्योंकि डैरेक्ट बाप पढ़ाते हैं। और एक ही बार आकर पढ़ाते हैं। बच्चों को खुशी बहुत चाहिए। बाबा भगवान हमको पढ़ाते है। और अच्छी रीति हरेक बात समझाते रहते हैं। कई2 बच्चों को पढ़ते2 विचार आती हैं यह क्या है। ड्रामा में यह आवागमन का चक्र है। परन्तु यह नाटक रचा ही क्यों है। इनसे क्या फायदा। बस फिर ऐसे चक्र लगाते रहेंगे। इनसे तो छूट जावें तो अच्छा है। जब देखते हैं यह तो 84 का चक्र लगाते ही रहना है तो ऐसे2 ख्याल आती हैं। भगवान ने ऐसा खेल क्यों रचा है। जो आवागमन से छूट नहीं सकते। इस से तो मोक्ष मिल जाये ऐसे2 ख्यालात कई बच्चों का आती हैं। इस आवागमन से, सुख-दुख से छूट जावें। बाप कहते हैं यह कब हो नहीं सकता। मोक्ष के लिए पुरुषार्थ करना ही व्यर्थ हो जाता। बाप ने समझाया है एक भी आत्मा पार्ट से छूट नहीं सकता। आत्मा में कितनी अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। वह है ही अनादी अविनाशी। बिलकुल एक्युरेट अन्दाज एक्टरस का है। एक भी कम जास्ती नहीं हो सकता। तुम बच्चों को सारी नौलेज है। इस ड्रामा के पार्ट से कोई भी छूट नहीं सकता। न मोक्ष पा सकते। सब धर्म वालों को नम्बरवार आना ही है। बाप समझाते हैं यह तो बना बनाया अविनाशी ड्रामा है। तुम भी कहते हो बाबा अब हम जान गये है, कैसे हम पूरा 84 का चक्र लगाते हैं। यह भी समझते हो जो पहले2 आते है वह ही 84 जन्म लेते होंगे। पीछे आने वाले की जरूर कम जन्म होंगी। छुटी की बात नहीं। यहाँ तो पुरुषार्थ करने का है। पुरानी दुनिया से नई दुनिया जरूर बननी है। बाबा हर बार2 समझाते रहते है। क्योंकि नये2 आते हैं उनको आगे की पढ़ाई कौन पढ़ावें। तो बाप नये2 को देख2 कर फिर पुरानी पाईन्टस रिपीट करते हैं। मुख्य है गीता। बच्चों को गीता को रेफ्रेन्स पहले2 देना होता है। क्योंकि कह देते हैं बाप सर्वव्यापी है। कुत्ते बिल्ले में कह देते हैं। क्योंकि सा0 जो करते हैं गणेश का, हनुमान का, जिस की पूजा करते हैं सा0 हो जाता है। तो समझते हैं भगवान सब में है। इसलिए सा0 होता है। दूसरी बात मुख्य क्यों है शास्त्रों में सर्वव्यापी की बात क्यों आई है। क्योंकि यहाँ तुम बच्चे हो, बाप कोई2 बच्चों में प्रवेश करते हैं तो समझते हैं परमात्मा सब में है। प्रवेश हो वाणी सुनाते हैं। सब प्रवेश करते नहीं है सा0 कराते हैं। कोई 2 बच्चों में प्रवेश भी करते हैं। तो उनको सर्वव्यापी समझ लेते है। कुत्ते-बिल्ले, पत्थर-भित्तर में भी कहदेते परमात्मा है। बच्चियाँ खुद अपना अनुभव सुनाती हैं। आज तो जैसे बाबा ने प्रवेश कर बड़ा जोर से मुरली चलाई। बहुत खुशी हुई। बहुतों को उठाया। और मनुष्य तो नेती2 करते आये हैं। हम नहीं जानते। दुनिया में कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं है जो रचता और रचना को आद, मध्य अन्त को जानता हो। जैसे तुम अभी जानते हो। तुम्हारी बुद्धि में अभी सारा नालेज है। जानते हो शुरू से ही लेकर कैसे हम पार्ट बजाते आये हैं। तुम यथार्थ रीति जानते हो। कैसे यह चक्र फिरता है। कैसे नम्बरवार आती है। कितने जन्म लेते हैं। इस समय ही बाप आकर ज्ञान की बातें सुनाते है। सतयुग में तो है ही प्रालब्ध। यह इस समय तुमको ही समझाया जाता है। गीता में भी शुरू और अन्त में यह बात ही आती है मन्मनाभव। पढ़ाया जाता है स्टेटस पाने लिए। राजा बनने लिए अब पुरुषार्थ करते हैं। और धर्म वालों को तो समझाया जाता है वह नम्बरवार आते हैं। धर्म स्थापक के पिछाड़ी सब को आना होता है। राजाई की बात नहीं। एक ही गीता शास्त्र है जिसकी बहुत महिमा है। भारत में ही बाप आकर सुनाते है। और सब की सदगति करते हैं। वह धर्म स्थापक जो आते है, वह जब मरते है तो फिर बड़ी तीर्थ बनाये

2

देते हैं। वास्तव में सब का तीर्थ यह भारत ही है। जहाँ बेहद का बाप आते हैं। बाप ने भारत में ही आकर
सर्व की सदगति की है। बाबा कहते हैं तुम भी लिबरेटर गाईड कहते हो ना। हम तुमको इस पुरानी दुनिया दुख
से लिबरेट कर शान्ति धाम, सुखधाम ले जाते हैं। बच्चे समझते हैं हम वाया शांति धाम सुखधाम जावेंगे। बाकि
सब शान्ति धाम चले जावेंगे। दुख में बाप आये सदगति करते हैं। जो भी धर्म स्थापक और उन्हों की संस्था
हैं सब यहाँ ही है। सब की सदगति बाप ही आये कर करते हैं। उनका जन्म मरण तो है नहीं। बाप आया
फिर चला जावेगा। उनके लिए नहीं कहेंगे कि मर गया। जैसे शिवानन्द के लिए कहेंगे शरीर छोड़ दिया। फिर
क्रिया कर्म आद बहुत कुछ करते हैं। यह बाप चला जावेगा इनका क्रिया कर्म सिरोमणि आद कुछ भी नहीं
करना होता है। उनको तो आने का भी पता नहीं पड़ता। क्रिया कर्म आदकी बात ही नहीं। और
सभी मनुष्यों की क्रिया कर्म करते हैं। बाप की क्रिया कर्म होती ही नहीं। उनको शरीर ही नहीं। सभी मनुष्य
सरसों मिसल पीस कर खलास हो जाते है। सतयुग में यह ज्ञान भक्ति की बात होती ही नहीं।
यह अभी ही चलती है। और सभी भक्ति ही सिखलाते है। आधा कल्प है भक्ति। रावण राज्य में भक्ति शुरू होता
है। फिर आधा कल्प ज्ञान रहता है। बाप आये ज्ञान का वर्सा देते हैं। ज्ञान कोई वहाँ साथ नहीं चलता।
वहाँ बाप को याद करने की दरकार नहीं रहती। मुक्ति है वहाँ याद करना होता है क्या? नहीं।
भक्ति भी पीछे वृधी होती है। पहले होती है अव्यभिचारी भक्ति। फिर व्यभिचारी। इस समय तो अति
व्यभिचारी भक्ति है। इसको रौरव नर्क कहा जाता है। एकदम तीखे में तीखा नर्क है। फिर बाप आकर तीखे
में तीखा स्वर्ग बनाते हैं। इस समय है 100% दुख। फिर 100% सुख शांति होगा। आत्मा अपने घर
जाये विश्राम पावेगी। समझाने में बड़ा सहज है। अभी तुम समझते हो रचना के आद मध्य अंत को बाप
द्वारा जान गये हो। बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूँ जब नई दुनिया की स्थापना कर पुरानी दुनिया
का विनाश करना है। इतना कार्य सिर्फ एक तो नहीं करेंगे। खिदमतगार बहुत चाहिए। इस समय तुम बाप
के खिदमतगार बनते हो। भारत की खास सच्ची सेवा करते हो। सच्चा बाबा सच्चा सेवा सिखलाते हैं। अपना
भी भारत का भी और विश्व का भी कल्याण करते हो। तो कितना खुशी से करना चाहिए। बाप कितना खुशी से
सर्व को सदगति करते हैं। अब भी सर्व की सदगति होनी है। जब यह है शुध अहंकार। शुध भावना। तुम
सच्ची2 सेवा करते हो। परन्तु गुप्त। आत्मा करती है शरीर द्वारा। तुम से बहुत पूछते हैं ब्रहमा कुमारियों
का उद्देश्य क्या है। बोलो ब्रहमा कुमारियों का उद्देश्य है विश्व में सतयुगी सुख शांति का राज्य स्थापन
करना। हम हर 5000 वर्ष बाद विश्व में शांति श्रीमत पर स्थापन कर विश्व शान्ति की प्राईज लेते हैं।
यथा राजा रानी तथा प्रजा प्राईज़ तो लेती है ना। नर्कवासी से स्वर्ग वासी बनना कम प्राईज़ है। वह पीस
प्राईज़ लेकर खुश होते हैं। मिलता कुछ भी नहीं। कुछ भी समझ नहीं है। बिलकुल ही बेसमझ है। सच्ची2 पीस
प्राईज़ तो हम बाप से ले रहे हैं। कहते हैं ना भारत हमारा उंच देश है। कितनी महिमा करते हैं। ऐसा
समझते हैं हम भारत के मालिक हैं। परन्तु मालिक हैं कहाँ। अभी तुम बच्चे जानते हो हम बाबा के श्री
मत पर राज्य स्थापन करते हैं। हथियार पावर तो कुछ भी नहीं। दैवी गुण धारण करते हैं। इसलिए तुम्हारा
ही गायन है। पूजन है। अम्बा के देखो कितने पुजारी हैं। परन्तु अंधश्रधा। अम्बा कौन है, ब्राहमण या देवता
यह भी पता नहीं। अम्बा भगवती तो नहीं है। अम्बा तो ब्राहमणी ही है। तुम उनके औलाद हो। ब्रहमा, आदी
देव। उनकी बेटी है अम्बा। काली, दुर्गा सरस्वतीआद आद बहुत नाम हैं। यहाँ भी नीचे अम्बा का छोटा
सा मंदिर है। अम्बा को भुजाएं दे दी हैं। ऐसे तो हैं नहीं। यह सब है अन्धश्रधा। अम्बा पास आये हो।
बाबा कहाँ? अम्बा से तो बाबा बड़ा होता है ना। तो इसको कहा जाता है ब्लाईन्ड फेथ। क्राइस्ट बुध
आद आये। उन्हों ने अपना धर्म स्थापन किया। मिथ तारीख सब बताते हैं। ब्लाईन्ड फेथ की बात नहीं। यहाँ

भारतवासियों को कुछ पता नहीं है हमारा धर्म किसने और कब स्थापन किया। इसलिए कहा जाता है ब्लाइन्ड फेथ। अभी तुम पुजारी से पूज्य बन रहे हो। तुम्हारी आत्मा भी पूज्य तो शरीर भी पूज्य बनता है। तुम्हारी आत्मा की भी पूजा होती है। फिर देवता बनते हो तो भी पूजा होती है। बाप तो है ही निराकार। वह सदैव पूज्य है। वह कब पुजारी नहीं बनते। तुम बच्चों के लिए कहा जाता है आपे ही पूज्य आपे ही पुजारी। बाप तो एवर पूज्य है। यहाँ आकर बाप सच्ची सेवा करते हैं। सब को सद्गति देते हैं। बाप कहते हैं अब मामेकं याद करो। दूसरे कोई देहधारी को याद नहीं करना है। यहाँ तो बहुत हिन्दू है। मुसलमान की ब्र जाये पूजा करते हैं। उनको पवित्र पड़ते हैं। बड़े लखपति करोड़पति जाकर लाए लाए अलाए... कहते हैं। कितनी अन्धश्रधा है। बाप ने तुमको अब हम सो का अर्थ समझाया है। वह तो कह देते हैं शिवोहम। आत्मा सो परमात्मा। अब बाप ने करेक्ट कर बताया है। अब जज करो भक्ति मार्ग में राइट सुना है, या हम राइट बताते हैं। हम सो का अर्थ बहुत लम्बा चौड़ा है। हम सो ब्राहम्णा, फिर हम सो देवता, बन रहे हैं। फिर क्षत्री बनेंगे। फिर शुद्र कुल में आवेंगे। अब हम सो का अर्थ कौन सा राइट है। हम आत्मा चक्र में ऐसे आती हैं। विराट रूप का चित्र भी है। इसमें चोटी ब्राहम्णा और बाप को दिखाया नहीं है। देवताएँ कहाँ से आये। कलयुग में तो है शुद्र वर्ण। सतयुग में फर्स्ट से देवता वर्ण कैसे होगा। कुछ भी समझते नहीं। भक्ति मार्ग में कितने मनुष्य रहते हैं। कोई ने ग्रन्थ पढ़ लिया, ख्याल आया मंदिर बनाये लिया। बस ग्रन्थ बैठ सुनावेंगे। बहुत मनुष्य आ जाते। बहुत फलोअर्स बन जाते हैं। फायदा कुछ भी नहीं। आजकल शास्त्र बहुत सुनाते हैं। बहुत दुकान निकल गई है। अब यह सब दुकान खतम हो जावेंगा। यह सब दुकानदारी भक्ति मार्ग में है। इन से बहुत धन कमाते हैं। सन्यासियों को वास्तव में शिव की पूजा करनी नहीं चाहिए। वह है ही ब्रहम्योगी। तत्व योगी। जैसे भारतवासी वास्तव में है देवी देवता धर्म को परन्तु हिन्दुस्तान में रहने कारण हिन्दु धर्म कह देते हैं। वैसे ब्रहम तो महातत्व है। जहाँ आत्माएँ रहती है। उन्हों फिर ब्रहमज्ञानी तत्व ज्ञानी नाम रख दिया है। नहीं तो ब्रहम तत्व है रहने का स्थान। तो बाप समझाते हैं कितनी भारी भूल कर दी है। अपन को ब्रहम योगी तत्व योगी कह देते हैं। यह सब है भ्रम। मैं आकर सब भ्रम दूर करता हूँ। भक्ति मार्ग में कहते हैं हे प्रभु तुम्हारी गत मत न्यारी है। गत तो कोई कर न सके। मत तो अनेक को मिलती है। यहाँ एक की मत कितनी कमाल कर देती है। सारी विश्व को चेंज कर देती है। अभी तुम बच्चों की बुधि में है इतने सब धर्म कैसे आते हैं। फिर आत्माएं कैसे अपने 2 सेक्शन में जाये रहती है। यह सब ड्रामा में नूंध है। यह भी बच्चे जानते हो दिव्य दृष्टि दाता एक बाप ही है। बाबा को कहा बाबा यह चाबी हमको दे तो हम किसको सा० कराये दें। बोला नहीं। यह चाबी किसको मिल नहीं सकता। इनके एवज में तुमको फिर विश्व की बादशाही देता हूँ। मैं लेता हूँ। मेरा पार्ट फिर यह है सा० कराने का। साक्षात्कार होने से कितना खुश हो जाते हैं। मिलता तो कुछ भी नहीं। ऐसे नहीं कि सा० से कोई निरोगी बन जाते हैं। या धन मिलता है। नहीं। सिर्फ सा० की खुशी होती है। जिसकी भक्ति करते हैं वह चैतन्य में

देखने में आते हैं। ऐसे बहुत कहते हैं हमको सा० हो तो शिव बाबा का बन जाऊंगा। बाप कहते हैं सा० से कोई फायदा नहीं। मीरा को साक्षात्कार हुआ। परन्तु मुक्ति को थोड़े ही पाया। मनुष्य समझते हैं वह रहती ही बैकुंठ में थी। परन्तु बैकुंठ कृष्ण पुरी कहाँ। यह सब है सा०। बाप बैठ सब बातें समझाते हैं। इनको भी पहले बैकुंठ का सा० हुआ। तो बहुत खुश हो गया। वह भी जब देखा मैं महाराजा बनता हूँ, विनाश भी देखा फिर राजाई का भी देखा तब निश्चय बैठा वो हो मैं तो विश्व का मालिक बनता हूँ। बाबा को प्रवेशता हो गई। बस, बाबा यह सब आप ले लो। हम को तो विश्व की बादशाही चाहिए। तुम भी यह सौदा करने आये हो। जो ज्ञान उठाते है उनको फिर भक्ति से जैसे नफरत आवेंगी।

वह ज्ञान को पकड़ लेते हैं। क्योंकि पहले आने वाले हैं। बहुत हैं जो भल ज्ञान भी लेते हैं फिर भी भक्ति को जो हेर पड़ी हुई है, अम्बा का दर्शन करना यह करना, तीर्थों पर जाना। हेर पड़ी है तो चले जाते हैं। सैन्टर सम्भालने वाली ब्राह्मणी भी कोई के साथ यात्राओं पर चली जाती हैं। कच्चे हैं ना। कोई कहते हैं हमारे साथ तीर्थ यात्रा पर चलो तो घूमने चले जाते हैं। तुम बच्चों को तो भारत की सेवा में मददगार बनना है। बूंद2 तलाब भरता है ना। कहते हैं बाबा हमारी यह एक दो रुपये की ईंट लगाये देना। बाबा कहते हैं तुम्हारा यह बहुत बन जाता है। तुम पदमपति बनने वाले हो। सुदामा की चावर मुठी का भी गायन है ना। बाप को कहा ही जाता है गरीब निवाज। जिन गरीब पास कुछ भी नहीं है उन्हों को बहुत मिलता है। यहां जो गरीब है वह वहां बहुत शाहुकार बनते हैं। जो शाहुकार है वह यहां ही अपन को स्वर्ग में समझते है। वह वहां गरीब बन जाते हैं। शाहुकारों को तुम्हारे पास में बैठने ही लज्जा आवेगी। वहां सन्यासियों आद के सतसंग में तो देखो कितने मोटरें खड़ी हो जाती हैं। मेला रहता है। लाखों मनुष्य जाते हैं। अभी तुम समझते हो सब है झूठ। पहला नम्बर को झूठ जो कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। कृष्ण भगवानुवाच, मैं सर्वव्यापी हूं। अब कृष्ण तो ज्ञान देते नहीं। कृष्ण तो देहधारी है। बाप कहते हैं भक्ति है अज्ञान। ज्ञान सागर तो एक ही बाप है। भक्ति में जो भी रहते है कहा जाता है कुम्भकर्ण के नींद में सोये हुये हैं। जब भंभोर को आग लगेगी तब फिर जागते हैं। लिखा हुआ भी है आखिरीन पाण्डवों की जीत हुई। कौरव हारे। फिर नतीजा क्या हुआ कुछ भी पता नहीं। गीता पढ़ने वाले बहुत होंगे पूछो महाभारत लड़ाई हुई रेजल्ट क्या हुआ। कुछ पता नहीं। दिखाते है प्रलय हुई। फिर सागर में पिपर के पत्ते पर कृष्ण आया। अभी यह हो कैसे सकता। पिपर के पत्ते पर तो बालक भी डुब जावेगा। मनुष्य तो सब सत सत कहते रहते। बड़ी प्रलय तो होती ही नहीं है यह भारत खण्ड तो अविनाशी है और जो भी खण्ड हैं वह खाली हो जाते हैं। यह है अविनाशी खण्ड। बाप कहते हैं मैं जहां आता हूं यह खण्ड कब विनाश नहीं होता। यह भी तुम जानते हो। मनुष्य तो समझते है बहुत दुनियायें है। मुन में भी पलाटस ढूंढते रहते हैं। कितने चर्यायें है। बाप बैठ बच्चों को समझाते है। आत्मा पर जैक चढ़ गई है बैटरी खाली हो गई है। इसको फिर भरना है। मोटर की बैटरी खाली हो जाती है तो फिर चार्ज कराते हैं। तुम्हारी बैटरी भी खाली हो गई है। अब फिर भरेगी। एक ही बाप बड़ी पावर है। आत्मा कितनी छोटी है। बाप समझाते है ~~आत्मा~~ बाप के साथ योग लगाओ तो बैटरी जो ढीली हो गई है वह तीखी हो जावेगी। ब्रह्मसमाजी वालों पास मंदिर में सदैव ज्योत जगी रहती है। उनको ईश्वर समझते हैं। परंतु ज्योत से क्या होगा। दुनिया में मनुष्यों की अनेकाअनेक मत है। यहां है एक मत। बाप आये सब की सदगति करते हैं। भारत खण्ड ही सब का तीर्थ है। यहां ही सदगति करने वाला बाप आते हैं। तब बाबा ने कहा था कि जन्म दिन मनाना है। तो एक ही शिव बाबा का ~~xxxx~~ मनाना है। और किसका भी जन्म दिन मनाना अर्थात वेस्ट आफ मनी है। इस बात से भी बिगरने लग कि तुम ऐसे के लिए वेस्ट आफ मनी कहते हो। तुम बच्चे जानते हो कि बाप ही सब को वन्डरफुल बनाते हैं। सबकी सदगति करते है। भक्ति से दुर्गति होती है। फिर भी जिनकी तकदीर में न होगा भक्ति छोड़ेंगे नहीं। तुम समझ जावेंगे यह ताजी भक्त है। पुराने नहीं है। पुराने भक्त जो होंगे वह झट चटक पड़ेंगे। उनको ही पहले फल मिलेगा। कम भक्ति करने वाले होंगे तो वह धीरे2 बाद में आवेंगे। यहां यह मालूम पड़ जाता है। बड़ा भक्त कौन है? कोई तो एकदम चटक पड़ते है। जैसे शमा पर परवाने आते हैं। कोई फिदा हो जाते कोई फेरी पहन चले जाते हैं। शास्त्रों में उल्टा सुल्टा लगाये दिया है। इसलिए मूंझे हैं। शास्त्र है उन्हों की जान ~~x~~ जगर। कहते हैं भगवान भी कहे शास्त्र न पढ़ो तो भी हम नहीं मानेंगे। यहां तो तुम्हारा डैरेक्ट बाप से कनेक्शन है। कितना सहज समझाते है। अच्छा मीठे2 सिकिल्धे बच्चों को याद प्यार गुड मार्निंग। ओम।